संपादकीय

शेयर बाजार में भारी गिरावट

अगर शेयर के खरीदारों की तादाद आपूर्ति के मुकाबले ज्यादा है तो इसका स्वाभाविक असर सूचकांक पर पड़ेगा शेयरों में उछाल आएगा और उसकी कीमतों में इजाफा होगा। अगर यह रुख तेज और ज्यादा तीखा रहा तो इसका सीधा असर आर्थिक विकास के दावों पर दिख सकता है। कई वर्षों के आंकड़ों के हिसाब से देखें तो हर वर्ष मार्च का महीना शेयर बाजार में गिरावट के लिहाज से संवेदनशील रहा है।

शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव इस कारोबार का एक आम हिस्सा है, मगर बुधवार को जिस तरह इसमें भारी गिरावट दर्ज की गई, उससे यही पता चलता है कि अनिश्चितता के बीच इसे निर्धारित करने वाले कारकों का संतुलन एक बार फिर डगमगाया। दरअसल, बुधवार को स्थानीय शेयर बाजारों में बड़ी गिरावट आई और सूचकांक 900 अंक से अधिक को गोता लगाते हुए तिहत्तर हजार अंक के स्तर के भी नीचे आ गया। साथ ही, इस कारोबार में बिकवालों के हावी रहने की वजह से निवेशकों को करीब 13.5 लाख करोड़ रुपए का भी नुकसान हुआ।

इस क्रम में छोटी और मध्यम आकार वाली कंपनियों के सूचकांक में तेज गिरावट के बीच चौतरफा लिवाली से बाजार को खासा नुकसान हुआ। बाजार के नीचे आने के कारकों में बिजली, ऊर्जा और धातु के शेयरों में नुकसान और विदेशी संस्थागत निवेशकों की हाल की बिकवाली भी मुख्य रही। यों पिछले कई वर्षों के आंकड़ों के हिसाब से देखें तो हर वर्ष मार्च का महीना शेयर बाजार में गिरावट के लिहाज से संवेदनशील रहा है। इसलिए इस बार की बड़ी हलचल को भी उसी उतार-चढ़ाव का हिस्सा माना जा रहा है। हालांकि शेयर बाजार अपनी प्रकृति में जैसा रहा है, उसमें हर रोज उतार-चढ़ाव और गिरना-संभलना उसका अभिन्न हिस्सा है। मसलन, भारी गिरावट के बाद अगले ही दिन शेयर बाजार में खासी तेजी देखी गई और सूचकांक में 330 अंकों से ज्यादा का संतोषजनक उछाल देखा गया और पिछले दिन के मुकाबले राहत का संकेत मिला। आमतौर पर यह शेयर खरीदने वालों की संख्या के समांतर मांग और आपूर्ति की स्थिति पर निर्भर रहता है कि सूचकांक की तस्वीर कैसी रहेगी। अगर शेयर के खरीदारों की तादाद आपूर्ति के मुकाबले ज्यादा है तो इसका स्वाभाविक असर सूचकांक पर पड़ेगा, शेयरों में उछाल आएगा और उसकी कीमतों में इजाफा होगा। अगर यह रुख तेज और ज्यादा तीखा रहा तो इसका सीधा असर आर्थिक विकास के दावों पर दिख सकता है। एक पहलू यह भी है कि ऐसी स्थिति अक्सर बनती दिखती है तो विदेशी निवेशकों के उत्साह में कमी आने की आशंका पैदा होती है।

सड़क हादसे और उनसे होने वाली मौत को कम करने का '4 ई फार्मूला'

दृष्टिकोण

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

चार ई में इंजीनियरिंग, एनफोर्समेंट, एजूकेशन और इमरजेंसी मेडिकल सुविधा शामिल है। सही भी है सड़क बनाते समय थोड़ा सा ध्यान नहीं देने से एक्सिडेंट स्पॉट रह जाते हैं और वह आये दिन दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। देश में सबसे अधिक दुर्घटना का कारण इस तरह के एक्सिडेंट स्पॉट ही हैं। हालात यहां तक है कि इस तरह के एक्सिडेंट स्पॉट गली कूचे की सड़कों से लेकर विशेषज्ञों द्वारा गहन चिंतन मनन से तैयार रोडमैप से बनने वाली एक्सप्रेस हाइवे तक में मिल जाती है। एक बड़ा कारण नेशनल हाइवे लेकर गली कूचों की सड़कों में ग ों की भरमार भी दुर्घटना और मौत का कारण बन जाती है। तस्वीर का एक पक्ष तो यह भी है कि नेशनल हाइवेज जहां हम टोल देकर यात्रा करते हैं वहां भी सड़कों के रखरखाव में कमी आसानी से देखी जा सकती है।

एक ओर दुनिया के देशों में सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मौत के आंकड़ों में कमी आने लगी है। वहीं लाख प्रयासों के बावजूद हमारे देश में सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मौतों के आंकड़ों में लगातार बढ़ोतरी ही हो रही है। हालांकि सरकार इसके लिए गंभीर है और नित नए प्रयास व कदम उठाये जा रहे हैं पर परिणाम अभी तक उत्साहजनक नहीं मिल पा रहे हैं। पिछले दिनों देश में चार ई कंसेप्ट पर चर्चा भी आरंभ हुई है पर उसका परिणाम अभी भविष्य के गर्भ में छुपा हुआ है। वैश्विक आंकड़ों पर नजर ड़ाली जाये तो 2010 से 2021 के दौरान सड़क दुर्घटनाओं के कारण मौत के आंकड़ों में 5 प्रतिशत की कमी आई है। ठीक इसके विपरीत हमारे देश में दुर्घटनाओं के कारण मौत का आंकड़ा कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है। देश में प्रति घंटा 53 दुर्घटनाएं और 19 मौत हो रही है। सबसे चिंतनीय तो यह है कि 60 प्रतिशत मौत 18 से 35 वर्ष के लोगों की हो रही है। 2022 के आंकड़ों पर नजर ड़ाली जाये तो देश में चार लाख 50 हजार दुर्घटनाएं हुईं और इन दुर्घटनाओं के कारण एक लाख 68 हजार लोग मौत के मुंह में समा गये। आंकड़ों के अनुसार दुर्घटनाओं में 12 प्रतिशत और मौत में 10 प्रतिशत की बढ़ोतरी रही। इस सबसे जीडीपी में 3.14 प्रतिशत का नुकसान हो रहा है। सड़क दुर्घटनाओं से मौत वास्तव में गंभीर है और नितिन गडकरी की चिंता देश की चिंता है। दरअसल दुर्घटनाओं से मौत के कारण होने वाले नुकसान को कम करके नहीं देखा जा सकता। दुर्घटना के कारण जन हानि, धन हानि और इसके साथ ही अन्य परिणामों की गंभीरता को आसानी से समझा जा सकता है।

देश में 2030 तक सड़क दुर्घटनाओं से होने वाली मौत की रफ्तार को आधी करने के लक्ष्य को लेकर चलने के बावजूद सड़क दुर्घटनाओं और मौत का आंकड़ा दोनों में ही कमी नहीं आ रही है। हालांकि पिछले दिनों भारतीय उद्योग परिसंघ के एक कार्यक्रम में केन्द्रीय परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौत के आंकड़े को 2030 तक आधा करने के लक्ष्य को अर्जित करने के लिए चार ई का फार्मूला दिया है। चार ई में इंजीनियरिंग, एनफोर्समेंट, एजूकेशन और इमरजेंसी मेडिकल सुविधा शामिल है। सही भी है सड़क बनाते समय थोड़ा सा ध्यान नहीं देने से एक्सिडेंट स्पॉट रह जाते हैं और वह आये दिन दुर्घटनाओं का कारण बनते हैं। देश में सबसे अधिक दुर्घटना का कारण इस तरह के एक्सिडेंट स्पॉट ही हैं। हालात यहां तक है कि इस तरह के एक्सिडेंट स्पॉट गली कूचे की सड़कों से लेकर विशेषज्ञों द्वारा गहन चिंतन मनन से तैयार रोडमैप से बनने वाली एक्सप्रेस हाइवे तक में मिल जाती है। एक बड़ा कारण नेशनल हाइवे लेकर गली कूचों की सड़कों में गड्ढों की भरमार भी दुर्घटना और मौत का कारण बन जाती है। तस्वीर का एक पक्ष तो यह भी है कि नेशनल हाइवेज जहां हम टोल देकर यात्रा करते हैं वहां भी सड़कों के रखरखाव में कमी आसानी से देखी जा सकती है। वर्षांत या अन्य कारणों से सड़क के ऊंची-नीची होने या गड्ढे होने के कारण दुर्घटनाएं आम है। खतरनाक मोड़ व अन्य तकनीकी खामियों के चलते दुर्घटनाएं होने से लोगों को जान से हाथ धोना पड़ जाता है। एनफोर्समेंट, एजूकेशन और दुर्घटना के समय तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होना अतिआवश्यक होता है। समय पर चिकित्सा सुविधा मिलने से दुर्घटना के कारण कम से कम जिंदगी तो बचाया जा सकता है। हालांकि दुर्घटनाओं और इनके कारण होने वाली मौत को लेकर दुनिया के अधिकांश देश चिंतित है और इस दिशा में लगातार प्रयास जारी है।

तस्वीर का दूसरा पक्ष और भी अधिक गंभीर है। सड़क दुर्घटनाओं के कारण दुनिया के देशों में होने वाली मौतों का विश्लेषण किया जाए तो 10 में से 9 मौत निम्न व मध्यम आय वाले देशों में हो रही है। यहां तक कि इन देशों में एक प्रतिशत के लगभग ही वाहन है। दूसरी और दुनिया के एक दर्जन से अधिक देश ऐसे भी हैं जिन्होंने एक दशक में सड़क दुर्घटनाओं के कारण होने वाली मौतों के आंकड़े को लगभग आधा कर लिया है। वहीं दुनिया के करीब 35 देशों ने मौत के आंकडे में 30 प्रतिशत से अधिक की कमी की है। वैश्विक स्तर पर यह किसी शुभ संकेत से कम नहीं है। आवश्यकता इसी बात की है कि भारत सहित दुनिया के देशों में सड़क दुर्घटनाओं और इनके कारण होने वाली मौतों को लगभग न्यूनतम स्तर पर लाने के प्रयास जारी रखने होंगे। सबसे अधिक ध्यान दुनिया के देशों को आपसी अनुभवों को साझा करने में करना होगा।

विषेषज्ञों को एक साथ कई मोर्चों पर प्रयास करने होंगे। सड़क निर्माण से लेकर एक नियत दूरी पर मेडिकल चिकित्सा सुविधा और अन्य आधारभूत सुविधाओं की और ध्यान देना होगा। केन्द्र के राजमार्ग परिवहन मंत्रालय व राज्यों के सड़क निर्माण विभागों को एक नहीं अपितु कई मोर्चों पर ध्यान देना होगा। एक ओर शोध और अनुसंधान पर ध्यान देना होगा, निर्माण सामग्री में गुणवत्ता और कार्य में स्तरीयता पर बल देना होगा। इसके साथ ही रोड सेफ्टी कानून कायदों की सख्ती से पालना के साथ ही भारतीय सड़कों के अनुसार वाहनों के निर्माण और सेफ्टी सिस्टम्स को मजबूत बनाना होगा। आशा की जानी चाहिए कि 4 ई कंसेप्ट अपने उद्देश्य में सफल रहेगा।

सुधामूर्ति सादगी और सेवा की प्रतिमूर्ति

नजरिया

अरुण नैथानी

सुधामूर्ति एक बहुचर्चित साहित्यकार भी हैं। कन्नड़ और अंग्रेजी साहित्य में उनकी खास पहचान है। उनकी संवेदनशील रचनाओं के चलते उन्हें खासी लोकप्रियता मिली। उन्हें कन्नड़ का लेडी प्रेमचंद की संज्ञा भी दी गई। वे कई उपन्यास, प्रेरक लेखन, तकनीकी पुस्तकें व यात्रा वृत्तांत लिख चुकी हैं। वहीं उनका बाल साहित्य भी खासा लोकप्रिय हुआ है। दुनिया की कई भाषाओं में उनकी पुस्तकें अनुवादित भी हुई हैं। बेहद संपन्न परिवार का हिस्सा होने के बावजूद सुधामूर्ति के दिल में समाज के वंचित, उपेक्षित व पीड़ित वर्ग के लिए गहरी संवेदना रही है। उनकी विशिष्ट पहचान समाज कल्याण के कार्यों को लेकर भी रही है। इन्फोसिस फाउंडेशन की चेयरमैन के रूप में उन्होंने समाज के लिए ठोस काम किये। इसके अंतर्गत हेल्थकेयर, स्वच्छता, गरीबी मुक्ति के अभियान भी शामिल हैं। उनके प्रयासों से हजारों बाढ़ पीड़ितों के लिए घर बनने संभव हो सके। कई स्कूलों में पुस्तकालय बनवाए। स्वच्छता अभियान के तहत सैकड़ों सार्वजनिक शौचालयों के निर्माण किये गए। इसी कड़ी में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में बनी विशिष्ट लाइब्रेरी भी शामिल है।

लेखिका, व्यवसायी और समाजसेवी सुधामूर्ति के जीवन के इतने आयाम हैं कि उनके व्यक्तित्व का सीधा विवरण देना मुश्किल हो जाता है। वे गाहे-बगाहे अपनी साफगोई व सुस्पष्ट विचारों के लिए सुर्खियों में रहती हैं। उनकी हालिया चर्चा सेवा-सृजन आदि क्षेत्रों में योगदान हेतु राज्यसभा के सदस्य के रूप में मनोनीत होने के लिए हो रही है। कभी-कभी किसी पद पर योग्य व्यक्ति की नियुक्ति उस पद को भी गरिमा दे जाती है। कमोबेश सुधा मूर्ति के बारे में ऐसा कहा जा सकता है। समाज में बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें पद्मश्री व पद्मभूषण का बड़ा नागरिक सम्मान पहले ही दिया जा चुका है। सबसे ज्यादा चर्चा उनकी सादगी को लेकर होती है। ऐसे दौर में जब भारत में नवधनाढ्य रुपयों की खनक में उछलने लगते हैं, सुधा मूर्ति की सादगी प्रेरित करती है। खुद अरबपति होने और पति की अरबों रुपये की संपत्ति के बावजूद उनकी सहजता-सरलता अनुकरणीय है। भारतीय संस्कृति व संस्कारों की पैरोकार सुधा कहती हैं कि पिछले तीस सालों से उन्होंने कोई नई साड़ी नहीं खरीदी। सादगी का आलम देखिए-जब उन्होंने लंदन में अपनी बेटी-दामाद के घर जाने के लिए प्रवासन अधिकारी को अपने जाने का पता 'दस डाउनिंग स्ट्रीट' प्रधानमंत्री का आवास बताया तो अधिकारी ने कहा कि आप कहीं मजाक तो नहीं कर रही हैं। खुद अरबपति होने के बावजूद सुधामूर्ति आम जीवन में ऐसे ही सादगी से रहती हैं।

कॉलेज की पढ़ाई से लेकर सार्वजनिक जीवन में उन्होंने इतना कुछ किया कि वे सदैव पुरस्कारों से नवाजी जाती रहीं। कालेज में गोल्ड मेडल जीतने के सिलसिले से लेकर पद्मश्री और पद्मभूषण तक उनके नाम हैं। वे शिक्षाविद् हैं, लोकप्रिय लेखिका हैं, समाज सेविका हैं। उन्होंने अपने सृजन से वैश्विक ख्याति अर्जित की है। वे इन्फोसिस फाउंडेशन की चेयरमैन रही हैं। वे कभी अपने सॉफ्टवेयर अरबपति पति एन. आर. नारायणमूर्ति, कभी वेंचर कैपिटलिस्ट बेटी अक्षता मूर्ति, कभी ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक तो कभी अपने बयानों की वजह से सुर्खियां बटोरती रही हैं। टीवी व सोशल मीडिया पर उनके बयान चाव से पढ़े जाते हैं। पिछले दिनों उनके शाकाहार पर दिये बयानों को लेकर सोशल मीडिया पर खूब गर्मागर्मी रही। उन्होंने कहा था कि जब वे विदेश जाती हैं तो पहले शाकाहारी होटल-रेस्टोरेंट ढूंढ़ती हैं। खासकर वे चम्मच का विशेष ध्यान रखती हैं कि कहीं वो तामसिक खाद्य पदार्थ के लिए उपयोग नहीं किया गया हो। आलोचना पर वे कहती हैं ये कोई नई बात नहीं है क्योंकि उनसे पहले पीढ़ी के लोग भी इसी तरह बाहर खाने को लेकर सतर्क रहते थे। सुधामूर्ति तब भी मजबूती से अपने पति एन. आर. नारायणमूर्ति के पक्ष में खड़ी नजर आईं जब उनके युवाओं को हर सप्ताह सत्तर अस्सी घंटे काम करने वाले बयान की आलोचना हुई थी।

कर्नाटक स्थित हावेरी में 19 अगस्त, 1950 को एक संस्कारी ब्राह्मण परिवार में जन्मी सुधा के पिता आर.एच. कुलकर्णी एक डॉक्टर व मां विमला अध्यापिका थीं। प्रारंभिक पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने अपनी व्यावसायिक शिक्षा कंप्यूटर साइंस और इंजीनियरिंग से की। उन्होंने कालांतर में इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस से कंप्यूटर साइंस में मास्टर डिग्री की। तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उनकी प्रतिभा का सम्मान करते हुए उन्हें स्वर्ण पदक दिया था। उस समय गिनी-चुनी लड़कियां ही ये आधुनिक विषय चुनती थीं। इसी तरह टाटा इंजीनियरिंग एंड लोकोमोटिव कंपनी में वे पहली महिला इंजीनियर के रूप में नियुक्त हुईं। लोग उन्हें अचरज से देखते थे कि क्या कोई महिला भी इंजीनियर हो सकती है।

सुधामूर्ति एक बहुचर्चित साहित्यकार भी हैं। कन्नड़ और अंग्रेजी साहित्य में उनकी खास पहचान है। उनकी संवेदनशील रचनाओं के चलते उन्हें खासी लोकप्रियता मिली। उन्हें कन्नड़ का लेडी प्रेमचंद की संज्ञा भी दी गई। वे कई उपन्यास, प्रेरक लेखन, तकनीकी पुस्तकें व यात्रा वृत्तांत लिख चुकी हैं। वहीं उनका बाल साहित्य भी खासा लोकप्रिय हुआ है। दुनिया की कई भाषाओं में उनकी पुस्तकें अनुवादित भी हुई हैं। बेहद संपन्न परिवार का हिस्सा होने के बावजूद सुधामूर्ति के दिल में समाज के वंचित, उपेक्षित व पीड़ित वर्ग के लिए गहरी संवेदना रही है। उनकी विशिष्ट पहचान समाज कल्याण के कार्यों को लेकर भी रही है। इन्फोसिस फाउंडेशन की चेयरमैन के रूप में उन्होंने समाज के लिए ठोस काम किये। इसके अंतर्गत हेल्थकेयर, स्वच्छता, गरीबी मुक्ति के अभियान भी शामिल हैं। उनके प्रयासों से हजारों बाढ़ पीड़ितों के लिए घर बनने संभव हो सके। कई स्कूलों में पुस्तकालय बनवाए। स्वच्छता अभियान के तहत सैकड़ों सार्वजनिक शौचालयों के निर्माण किये गए। इसी कड़ी में हार्वर्ड विश्वविद्यालय में बनी विशिष्ट लाइब्रेरी भी शामिल है।

सबसे महत्वपूर्ण बात है कि वे अपने पति के मिशन में हरदम साथ खड़ी रहीं। उन्होंने उन्हें प्रेरित किया। एक टीवी कार्यक्रम में जिक्र भी किया था कि उन्होंने पति नारायणमूर्ति को इन्फोसिस की स्थापना के लिए वर्ष 1981 में दस हजार रुपये की पूंजी दी थी। फिलहाल नारायणमूर्ति की गिनती हजारों करोड़ वाले अरबपतियों में होती है। सादगी से समाज के कल्याण के लिए निरंतर काम करने वाले इस दंपति की भारत में विशिष्ट छवि है। उनकी विशिष्ट सफलता व सादगी का जीवन करोड़ों भारतीयों के लिए प्रेरणास्रोत है।

बहरहाल, अपनी साफगोई और सहजता के लिए चर्चित सुधामूर्ति को भारतीय मीडिया से हमेशा सकारात्मक प्रतिसाद मिलता रहा है। वे अक्सर प्रिंट व डिजिटल न्यूज प्लेटफॉर्म पर साक्षात्कारों में बेबाकी से अपनी बात रखती नजर आती हैं। वे भारतीय जीवन मूल्यों व प्रकृतिमय जीवन की पक्षधर हैं। बच्चों का गुणवत्तापूर्ण लालन-पालन और महिलाओं का सशक्तीकरण सदैव उनकी प्राथमिकताओं में रहा है। अनेक विश्वविद्यालयों से मिली मानद डॉक्टरेट की उपाधियां और तमाम राष्ट्रीय पुरस्कार उनकी मेधा व योगदान का प्रतिफल है।

आजकल

अरुणाचल पर चीन की वक्रदृष्टि

यह पहली बार नहीं है कि चीन ने अरुणाचल पर कुतर्कों का राग अलापा हो। गाहे-बगाहे जब भी भारत के विशिष्ट व्यक्ति अरुणाचल जाते हैं और भारत सामरिक बढ़त लेता दिखता है, चीन गीदड़ भभकियां देने लगता है। हालिया मामला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बीते शनिवार बेहद ऊंचाई पर स्थित सबसे लंबी सुरंग के उद्घाटन का है। जिसको लेकर चीन को बेचैनी हुई है। उसने प्रधानमंत्री की अरुणाचल यात्रा पर भारत से राजनयिक आपत्ति दर्ज करायी है। जिसका कोई औचित्य नहीं है। दरअसल, साम्राज्यवादी चीन धरातल पर सैन्य ताकत दिखाने के साथ ही मनोवैज्ञानिक स्तर पर युद्ध लड़कर भी दबाव बनाने की कुत्सित कोशिशें करता रहता है। दरअसल, प्रधानमंत्री ने अरुणाचल के तवांग को असम के तेजपुर से जोड़ने वाली महत्वाकांक्षी सेला सुरंग राष्ट्र को समर्पित की थी। इस सुरंग के काम करने से अब तमाम प्रतिकूल मौसम में भी सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण तवांग तक भारतीय सैनिकों की आवाजाही व हथियार-रसद की आपूर्ति सामान्य हो जाएगी। भारत की सामरिक बढ़त पर चीन का तिलमिलाना स्वाभाविक ही है। करीब तेरह हजार फीट पर बनी यह सुरंग इस ऊंचाई पर बनी सबसे लंबी सुरंगों में शुमार है।

जाहिर है भारत की इस कामयाबी से चीन का तिलमिलाना स्वाभाविक ही था। दरअसल,चीन अरुणाचल पर अनावश्यक दबाव बनाते हुए इसे अपने कब्जाये हुए तिब्बत का दक्षिणी भाग बताता है। यह सर्वविदित है कि भारत-चीन के बीच वास्तविक नियंत्रण रेखा को लेकर हुए समझौते में अरुणाचल को चीन ने भारत का अंग माना है। निस्संदेह, लोकतांत्रिक विश्व में अंतर्राष्ट्रीय सीमा की अनदेखी करके अपना अधिकार जताने का कोई औचित्य नहीं है। ऐसा नहीं हो सकता है कि कोई देश दूसरे देश के हिस्से पर अपनी काल्पनिक दावेदारी जताकर आंखें दिखाए। उल्लेखनीय है कि बीते साल भी चीन ने अपने एक विवादित नक्शे में न केवल अरुणाचल के कुछ हिस्सों पर अपनी दावेदारी जतायी थी, बल्कि अपनी दादागीरी दिखाने को कुछ स्थानों के नाम भी बदल दिये थे। जिसको लेकर भी भारत ने तल्ख प्रतिक्रिया प्रकट की थी। बहरहाल, अरुणाचल पर चीन की हालिया टिप्पणी पर भारत ने कड़ा प्रतिवाद किया है और इसे हमारी राष्ट्रीय संप्रभुता पर आंच आने वाले कृत्य के तौर पर देखा है। जाहिर बात है कि ताकतवर मुल्क यदि अन्य देशों के भौगोलिक इलाकों को लेकर ऐसा रवैया अपनाएंगे तो फिर अंतर्राष्ट्रीय सीमा का क्या औचित्य रह जाएगा।

सत्ता की राजनीति हेतु प्रचंड पथ का फरेब

मुद्दा

पुष्परंजन

'एक सिंगा गेंडा' नेपाल का राष्ट्रीय पशु है। प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 23 सितंबर, 2023 को अपनी चीन यात्रा में दो गेंडे साथ लेते गये थे। चीन इस गिफ्ट से गद्गद था। तब यह सुनिश्चित हुआ कि प्रचंड 'गेंडा कूटनीति' को आगे भी मज़बूत करते रहेंगे। ट्रेड-ट्रांजिट, ऊर्जा व बीआरआई जैसे समझौतों को आप उभयपक्षीय उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। चीनी दूतावास ने 14 जनवरी, 2024 को काठमांडो में पहली बार चीनी चंद्र नववर्ष समारोह का आयोजन किया था, जिसका उद्घाटन प्रधानमंत्री प्रचंड ने किया था। कार्यक्रम के दौरान कलाकारों ने चीनी कलाबाजी और जादू का प्रदर्शन किया था। इसके दस दिन बाद चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीसीआईडी) के अंतर्राष्ट्रीय विभाग में उपमंत्री सुन हैयान ने 26 जनवरी, 2024 को नेपाल का दौरा किया था। चीनी जादू के साथ-साथ प्रचंड की गेंडा नीति को समझने के लिए इस संदर्भ की ज़रूरत है।

आप जितनी मर्जी प्रचंड की आलोचना करें। वो वज्रचर्मा हैं। लोगों की बातों और निंदा का असर प्रचंड पर नहीं होता। नेपाल में भारत की तरह द्विसदनात्मक व्यवस्था है। 59 सदस्यीय ऊपरी सदन 'राष्ट्रीय सभा' (नेशनल असेंबली) में मंगलवार को वोटिंग के ज़रिये प्रचंड ने अपने भाई नारायण दाहाल को अध्यक्ष पद के लिए निर्वाचित करा दिया। नेशनल असेंबली में स्पीकर पद के लिए मंगलवार को हुए मतदान में नारायण दाहाल को ओली की नेकपा-एमाले और माओवादी सेंटर समेत पांच पार्टियों ने समर्थन दिया था। उसके अगले दिन बुधवार को प्रचंड 275 सदस्यीय निचले सदन 'प्रतिनिधि सभा' में विश्वास मत जीत गये।

संसद में विश्वासमत वाली सुबह प्रचंड से चीनी राजदूत छन सोंग बलुआटार स्थित पीएम आवास पर मिले। प्रचंड के लिए वोट करने वाले नेकपा-एमाले के 75, माओवादी सेंटर के 32, राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के 21, जनता समाजवादी पार्टी के 12, यूनिफाइड सोशलिस्ट के 10, नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के 4, आम जनता पार्टी के प्रभु साह के साथ-साथ निर्दलीय अमरेश कुमार सिंह और योगेन्द्र मंडल भी शामिल हैं। प्रचंड को समर्थन देने वालों में आम जनता पार्टी नेपाल के साथ-साथ निर्दलीय सांसद अमरेश कुमार सिंह और योगेन्द्र मंडल भी शामिल हैं। प्रचंड के खिलाफ मतदान करने वालों में नेपाली कांग्रेस के 87 सांसद, राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी के 13, जनमत पार्टी के 5, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी के 4 और राष्ट्रीय जनमोर्चा के एक विधायक शामिल थे। विश्वास प्रस्ताव के समय नेपाल वर्कर्स एंड पीजेंट्स पार्टी के प्रेम सुवाल मतदान से अनुपस्थित रहे।

इस हफ्ते जो कुछ नेपाल की राजनीति में घटित हुआ, उससे एक बात तो स्पष्ट है कि प्रचंड को सत्ता में बने रहने की भूख सबसे अधिक है, जिसका फायदा केपी शर्मा ओली जैसे कुटिल नेता उठा रहे हैं। ओली को प्रचंड के रूप में एक कठपुतली मिल चुका है। जो ओली कभी प्रचंड के परिवार वालों को पचा नहीं पाये, अब उनसे कोई परेशानी नहीं हो रही है। 14 अगस्त, 2022 को केपी शर्मा ओली ने प्रचंड पर कटाक्ष किया था, 'मेरा छोटा भाई अभी भी जमीन जोतता है। क्या मैंने उसे राजदूत बनाया अगर मेरा इरादा अपने भाई को राजदूत बनाने का होता तो शायद मैं ऐसा कर सकता था।' ओली ने पत्रकारों से पूछा था, क्या आपने मेरे भाई को राजदूत बनने, या किसी समिति में शामिल होने की इच्छा व्यक्त करते हुए सुना है। यूएमएल के चेयरमैन ओली से अब कोई पूछे प्रचंड के भाई-भतीजावाद पर इतनी आपत्ति रही थी, तो आज क्या हुआ कि नारायण दाहाल को उनकी पार्टी उच्च सदन में स्पीकर पद के लिए समर्थन दे रही थी ओली दरअसल, प्रचंड को इस क़दर कमज़ोर, सत्ता लोभी और परिवार लोलुप साबित कर देना चाहते हैं कि एक समय के बाद नेपाल की जनता उनसे घृणा करने लगे। अस्सी के दशक में नेपाल के अकादमिक सर्किल में 'प्रचंड पथ' की खूब चर्चा होती थी। अलग-अलग लोग, 'प्रचंड पथ' की व्याख्या भी अलग-अलग। पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड' के शैदाई कहते थे, 'मार्क्स-लेनिनवाद, माओ और पेरूवियन गुरिल्ला लीडर गोंज़ालो की विचारधारा का कॉकटेल है, 'प्रचंड पथ'।

लेकिन आज की तारीख़ में प्रचंड पथ की साधारण व्याख्या यह है कि अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करना और परिवार वालों को राजनीति में सेटल करने का दूसरा नाम है 'प्रचंड पथ'। 25 दिसंबर, 2022 को प्रचंड तीसरी बार प्रधानमंत्री की कुर्सी पर विराजे थे। प्रचंड ने जितनी तेज़ी से गठबंधन को बदलने का उदाहरण पेश किया है, नेपाल के विश्लेषक उसकी तुलना नीतीश की पलटूमार पॉलिटिक्स से कर सकते हैं। लेकिन इसकी समीक्षा करनी चाहिए 'प्रचंड पथ' में परिवार को गद्दी देने की गुंजाइश है ऐसा तो नहीं, कि केरल के मुख्यमंत्री कामरेड पिनराई विजयन से प्रचंड ने प्रेरणा ली हो मई, 2021 में पिनराई विजयन ने अपने दामाद मोहम्मद रियाज़ को कैबिनेट में जैसे जगह दी, माकपा पर सवाल उठने लगे। प्रचंड ने प्रधानमंत्री बनने के बाद अपनी पुत्री गंगा दाहाल को जिस तरह आगे बढ़ाने की कवायद आरंभ की है, वह सत्ता के गलियारे में चर्चा का विषय है। दूसरी बेटी रेणु दाहाल की राजनीति चितवन में सलामत रहे, चुनांचे रबि लामिछाने से समझौते की विवशता है। 11 दिसंबर, 2024 को प्रचंड 72 साल के हो जाएंगे।